

सर्वोत्तम- धमार

श्री व्रजभूषणजी (तृतीय गृह) कृत

रग : काफी

ललभ मेरे मन बसो हो ।

मेरे ललना ॥

मोकों और न कछु सुहाय ।

आ त्रिभुवन में न समाय,

छवि निरखत मन न अधाय ॥

ध्रुव ॥१॥

वाडौ सीमा अति सुंदर, सुखद कांकरवारौ गाम ।

जाउ मास वैसाख कृष्ण एकादसौ प्रकटे श्रीलक्ष्मण धाम ॥२॥

कृत रूप रहित अप्राकृत, धर्म सहित साकार ।

म निरूपित श्रीपुरुषोत्तम, वदन अनिल अवतार ॥३॥

करुणा निज महिमा श्रीहरि, प्रकट करन के काज ।

वदन अनल रूप आनंदमय, प्रकट श्रीवल्लभराज ॥४॥

जीव उद्धारन हित हरि, धर्यो द्विजवर अवतार ।

नाथ प्रकटित मार्ग तै, नाहिन होत निस्तार ॥५॥

पावाद तम बद्धयौ भूतल में, रवि बिनु नाहि उजास ।

श्रीवल्लभ प्रकट होइके स्तुतिपथ कियो है प्रकास ॥६॥

भागवत प्रतिपद मणिवर, भूषित भूषित अंग ।

फलपुरान सास्त्र स्तुति स्मृति कौ, कीनौ विरोध कौ भंग ॥७॥

भागवत अमृत उदधि रस, निज जन पान कराय ।

म सहित व्रजजन की सेवा, सिखवत आप बताय ॥८॥

गम बखानत भूतल स्वर्ग में अनल उदयौ इंदु ।

रमानन्द रूप तै प्रकटे कृष्ण सेवारस सिन्धु ॥९॥

घन रहित जीव कलियुग के, दैवी किए सनाथ ।

करि बांह पुरुषोत्तम सौं, जल सिर धरि निज हाथ ॥१०॥

प्र भाष्य सुबोधिनी कीर्नी, नाना ग्रन्थ निबंध ।

हमवाद साकार प्रकटायौ, टार्यौ स्वीय प्रतिबध ॥११॥

कृपादृष्टि वृष्टि अमृतरस, सींचे दासी दास ।

रोष दृष्टि दावानल श्रीप्रभु, कीने असुर विनाश ॥१२॥

प्राकृत रूप दिखाइ प्रानप्रति, असुरनि मोह उपजाइ ।

श्रीलक्ष्मण गृह प्रकट होइके, निजजन आनन्द बढाइ ॥१३॥

करि करुणा करुणानिधान प्रभु, देत अभय पद दान ।

बुद्धिहीन कर्म जड जीवन कौ, टार्यो अति अभिमान ॥१४॥

श्रीवल्लभ जाकौ करे अपुनौ सो, व्रजपति प्रिय होइ ।

ताके कोटि जन्म के पातक, तत्क्षण में क्षय होइ ॥१५॥

अनुभव निगम ज्ञान तै जाने, श्रीवल्लभराज स्वरूप ।

भूतल भवित प्रचार करन कौ, अन्वय लिए अनूप ॥१६॥

वृंदावन श्रीगोवर्द्धन प्रिये, प्रिय यमुना तट वास ।

कुमुदिनीगल मन रंजन कौ, सहस्र उडुपाति उजास ॥१७॥

कालिंदी की महिमा कलि में, कीने श्रीलक्ष्मणसूत ।

अष्टसिद्धि पैयत वाही तै, कहत वचन प्रसूत ॥१८॥

गोकुलनाथ सदा सुखदायक, नमो सबै करि सीस ।

लीला हृदय बसो निज जन के, ये ही विधि देत असीस ॥१९॥

व्रजपति नखसिख अंग माधुरी, बरनौ अनल स्वरूप ।

मधुरे बिधान अष्टक कीर्तन तै, बस होत श्रीगोकुल भूप ॥२०॥

ब्रह्मसंबंध कराइ कै कीने, पंच दोष निवृत्त ।

प्रकट दिखाइ पुष्टिमार्ग प्रभु, जीव कौ किए हैं प्रवृत्त ॥२१॥

निज आज्ञा उल्लंघन दोष, दिखायो महाप्रभु आप ।

करि प्रबोध सिखवत दासन कौ, मिट्यो सकल उर ताप ॥२२॥

मार्ग भवित सुधा समुद्र मथि, प्रकट लिए नवरत्न ।

नव विधि विंता निज दासन की, निवृत्त किए हैं यत्न ॥२३॥

व्रजपति सुखद विरह अनुभव कौ, सर्वसु त्याग उपदेस ।

नाम सहस्र नंदनंदन के, प्रकट किए हैं नरेश ॥२४॥

सर्ग आदि लीला दस विधि मथि, जाकौ निरोध है नाम ।

देखवित्पयस्य त्रिविध फल, त्रिविध लीला अभिराम ॥२५॥

पुष्टि प्रवाह मर्यादा मारग, तिनकों दिखायो भेद ।
 दैवी जीव क्रीडा साधन फल, सबको प्रमान है वेद ॥२६॥
 सकल संदेह निवारन को, जलभेद कियो ब्रजईस ।
 भवितभाव दिखाए सबनिकों, भेद बतावत बीस ॥२७॥
 बालबोध कीनों, करुणादिधि, बालक पति जिय जान ।
 सकलसिद्धांत जनाय स्वीयन को, टार्यौ सकल अज्ञान ॥२८॥
 देसादिक पट साधन कीने, तातै नहीं निस्तार ।
 दै वरदान कृष्णाश्रय कीनों, दीने पदारथ चार ॥२९॥
 दृढ आश्रय के कारन कीने, धैर्य विवेक विचार ।
 कलियुग जीव उद्गारे श्रीवल्लभ, निज जन प्रान अधार ॥३०॥
 क्षर प्रपंच अक्षर तै उत्तम, त्रिगुणातीत महाराज ।
 श्रीहरिवदन जो प्रकट न होते, ता बूडत वेद जहाज ॥३१॥
 दैवी सृष्टि हेतु करुणानिधि, श्रीहरि बांधी पाज ।
 अति आवत सकल दुस्तरन को, भवसागर उतरन काज ॥३२॥
 श्रीपुरुषोत्तम भजन हेतु तै, कीनों स्मरण पुष्टि ।
 तामें मर्यादा मारग को, साधन नाहिन इष्ट ॥३३॥
 श्रीवल्लभ तै विमुख जीव जेते, बूडत भवसिंधु ।
 जाको शोध किए श्रीवल्लभ, निसिदिन लहत आनंद ॥३४॥
 कहत निरोध पदारथ को यह, सबहिन को अज्ञान ।
 करि लक्षणा निरोध बतायौ, श्रीलक्ष्मणसुवन सुजान ॥३५॥
 साधन सकल किए हैं महाप्रभु, निज दासनि के काज ।
 अति कृपालु करुणानिधि वल्लभ, सेवकजन सिरताज ॥३६॥
 निजानंद पुष्टि अति विग्रह, अंबुजनयन विसाल ।
 षट्गुन सहित पूरन पुरुषोत्तम, निर्मल रसिक रसाल ॥३७॥
 त्रिविध सृष्टि भवित नव लक्षण, कियो विवेक विचार ।
 साधन सहित मानसी सेवा, पुष्टि पदारथ चार ॥३८॥
 भूमिभाग्य सहज अति सुन्दर, श्रीपरिवृढ मुखचंद ।
 अदेय दान दक्ष अति मोहन, सुखद चरनारविंद ॥३९॥
 सर्व सिद्धांत सिरोमणि पत्र लिखि, बांध्यो गोकुलशय ।
 माया तिमिर निविड भूतल में, निरखत ताप नसाय ॥४०॥

नवलक्षणा भवित मधि वाई, याहि रीति विनियोग ।
 रंचक वस्तु समर्थ स्नेह सों, ताको करत प्रभु भोग ॥४१॥
 व्रजसुंदरी भाव रस पूरित, आनंदनिधि को अंग ।
 ऋतु वसंत हरषत श्रीवल्लभ, निरखित लजत अंग ॥४२॥
 केसरि धोती उपरना केसरि, केसरी भीनी पाग ।
 श्रीवल्लभ गिरिधर वन बिहरत, अंतर अति अनुराग ॥४३॥
 चोबा चंदन अबीर कुंकुमा, उडत गुलाल सुरंग ।
 ताल पखावज झांझ डफ बाजत, सरस स्वांग सुदंग ॥४४॥
 सबै समाज साजि वन विहरत, बोलति कोकिला कोर ।
 त्रिविध पवन बहत सुखकारी, सूरसुताजू के तोर ॥४५॥
 अति सुगंध मत्त मधुपगन, करत मधुर सुर गान ।
 दादुर मोर चकोर सेर मानों, लेत सप्त सुर तान ॥४६॥
 जो सुख अमर लोक में नाहीं, सो सुख गोकुल मांहे ।
 सुखद सदा सरनानति जिनिकी, श्रीवल्लभ कल्पतरु छाहे ॥४७॥
 मन वच कर्म करि श्रीवल्लभ भज, नाहिन और उपाय ।
 साधन कोटि करौ जिन कोऊ, यह फल कबहुँ न पाय ॥४८॥
 खेलि फाग अनुराग सिंधु बढ्यौ, मची अरगजा कीच ।
 निज जन कुमुदिनी गन फूल्यौ, निरखे वल्लभ ससि बीच ॥४९॥
 जो यह अनल आनंद रूप को, निसिदिन करै विचार ।
 पावै सदा आनंद अधरामृत, रसकृत मुवित प्रचार ॥५०॥
 जो यह लीला सुनै सुनावै, प्रभु सन्मुख करै गान ।
 ताके हृदयकमल बिच परसत, प्रभुजी करे स्वज्ञान ॥५१॥
 दास अनन्य चरनरज धन की, करत बहुत मन आस ।
 श्रीवल्लभ पदरज प्रताप तै, गावत जन हरिदास ॥५२॥



सर्वोत्तम- १०८ पद

गोविन्ददास (श्रीगुसांईजी के श्रवण) कृत

रग : भैरव

प्राकृत धर्म रहित अप्राकृत निखिल धर्म सहित साकार ।
निगम निरूपित सुद्ध पुरुषोत्तम वदनानल श्रीवल्लभ अवतार ॥१॥
स्तुति करौ सदानंद पद सेवौ सुजस स्त्रवन करौ गुनगान ।
चित में चितन करौ रैनदिन सुबोधिनी अरु वचनामृत पान ॥२॥
करुणा करि कलि प्रकट भए बिन हेतु न दैवी जन उद्धार ।
श्रीविहल निजपद नौका दै 'गोविंद' उतारौ भवसागर पार ॥३॥

रग : विभास

विदुष जन दृष्टि कलिकाल कहा तिमिर नै निमि नवनीत कौ हार्द न लह्यौ ।
ब्रह्म साकार कौ भेद जाने बिना आसुरावेस तै विरुद्ध ही कह्यो ॥१॥
भूमि के जीव मतिहीन वैकुण्ठ की बात कौ कहौ कहा मंद कैसे ज जाने ।
ब्रह्म साकार कौ रूप जाने बिना मूढ अति अज्ञान वयो जु मानै ॥२॥
तस्य संप्रति तातै नहि होत है उग्र माहात्म्य कौ न पार पावै ।
श्रीविहल पदकमल रजधन 'गोविंद' जन हरिदल वहिन गुन गावै ॥३॥

रग : श्रीरामश्री

जब श्रीहरि भई यह इच्छा निज महिमा प्रगटबे काज ।
ब्रजपति वदन-अनल आनंदमय तब प्रगट किए वाक्पति द्विजराज ॥१॥
सो स्वरूप प्रगट्यौ भूतल में विद्यानिधि विदुषन सिरताज ।
दरस परस आनंद उपज्यौ उर तीनों भुवन रहे सब गाज ॥२॥
दैवी जन सब करत बधाई चिता गई सबनि की भाज ।
कहत 'गोविंद' यह गान करौ नित बाल वृद्ध सब जोरि समाज ॥३॥

रग : बिलावल

अति तदुक्त दुर्बोध जानि जिय कियौ सुबोध श्रीविहलेश ।
शतअष्टोत्तर नाम दान दै महा अध हर्यो मिदयो वलेस ॥१॥
पढौ सुनौ चित में चितन करौ कछु मति धरौ चिता कौ लेस ।
एक रसना कहौ कहा बरनौ थकी सारदा सहस मुख सेस ॥२॥
यह अवतार काहू बरन्यो स्तुति स्मृति सास्त्र पुरान विसेस ।
दैवीजन उद्धारन कौ प्रगटे भूतल 'गोविंद' प्रभु श्रीव्रजेस ॥३॥

रग : आसावरी

ऋषि में ऋषिराज श्रीमदग्निकुमार ।
आनंदमय नखसिख पर लैहौ वारौ कोटिक मार ॥१॥
नाम्नां छन्दो जगत्यसौ सो मन वच क्रम निरधार ।
श्रीकृष्णास्य देवता श्रीमद्भूत द्विज अवतार ॥२॥
करुणा बीज प्रभु प्रमेयबल कियो जगत उद्धार ।
षट्गुन पूरन श्रीवल्लभ के अगनित गुन 'गोविंद' जु अपार ॥३॥

रग : टोडी

भक्तियोग प्रतिबंध निवारन कारन सर्वोत्तम विनियोग ।
सिद्धि: श्रीकृष्णधरामृतास्वादफल निःसंशय यह आस्य उपयोग ॥१॥
जो रस सिव चतुरानन दुर्लभ धनपति जलपति गनपति भावै ।
सुरपति दिनपति अरु राकापति दरसन करि समाधि नित ध्यावै ॥२॥
यह नित नियम करौ जिय अपने पढौ सुनौ चित चितन कीजै ।
श्रीविहल करुणा करिकै 'गोविंद' कौ सर्वोत्तम दीजै ॥३॥

यह छः पद स्तोत्र के पहिले छः श्लोकों के हैं । अब एक नाम का एक एक पद है ।

(१) राग : बिलावल

आनन्द रूप श्रीवल्लभ को अपने जिय मानो ।
और सबै तुम छांडि इनिही को मानो ॥१॥
तीन लोक में कोउ नहीं पटतर को आवै ।
देव कोटि तैतीस में कोउ पार न पावै ॥२॥
आनंद नाम रसना रटौ अर्थहि विचारि ।
पैये 'गोविंद' जन जप किए पुष्टि पदारथ चारि ॥३॥

(२) राग : विभास

तन मन धन मम यह मेरी सर्वस परमानंद ।
श्रीवल्लभ भजहु निसिदिन गान करहु सुखंद ॥१॥
निरखि निरखि मेरे नैननिसिराऊ श्रीहरिवदन मुखचंद ।
आनंद मगन सदा रहूँ रवि दरसन मानहु अरविंद ॥२॥
सुभग मूरति जिनि नैनानि निरखे सो जन परे प्रेम फंद ।
यह महानिधि मेरे हृदय कमल तै छिन मति टारौ कहत 'गोविंद' ॥३॥

(३) राग : धनाश्री

मेरी सर्वस श्रीकृष्णास्य ।
मायावाद निवारन कारण कीनो है अणुभाष्य ॥१॥
सुर नर मुनि देव कोटि तैतीसो करत है सदा उपास्य ।
यह ताजि और तत्व काहें रे मानें होहि लोक उपहास ॥२॥
श्रीवल्लभ चरनकमल सेवक जन सबतें रहत उदास ।
श्रीविहल पदरज 'गोविंद' करत बाहेमुख को हास ॥३॥

(४) राग : भैरव

कृपानिधि कृपा कीर्ति दरस दिशायो ।
भटके भटके सब तीन लोक में अब सह निधि पायो ॥१॥
स्मृति स्मृति शास्त्र पुरान अगोचर सुर नर मुनि कोउ पार न पायो ।
श्रीहरिवदन बहिन करुना करि निज स्वरूप महिमा बताओ ॥२॥
षट् साधन आधिकार जपट भए काले में कृष्ण भजन सु शिखायो ।
यह वितेक जानि जिय अपने जन 'गोविंद' विमल जस गायो ॥३॥

(५) राग : बसन्त

दैवोद्धारप्रयत्नात्मा को न आधी निमेष बिसरऊ ।
चित में चितन करै अहर्निश उस आनंद उपजाऊं ॥१॥
और द्वन्द जिय जानि छांडि दै श्रीवल्लभ गुन गाऊं ।
मेरी सर्वस सुभग मूरति बिनु कहूं न सीस नवाऊं ॥२॥
वचनामृत सुबोधिनी सुनिकें श्रीवल्लभ उर लाऊं ।
गोद पसारि मांगत 'गोविंद' जन चरनकमल रज पाऊं ॥३॥

(६) राग : ईमन

स्मृतिमात्रार्तिनाशन सुमिरे बढत आनंद ।
आनि उपाय उपाधि जानि जिय तजि चित भजि श्रीवल्लभ मुखचंद ॥१॥
रसना रटत नैंकु नहि छांडत फूलि रहे निज जन अरविंद ।
हंसत परस्पर करत कुलाहल सब ही परे प्रेम के फंद ॥२॥
भूतल फिरत महारस भीने निज जन अति मदमत गयंद ।
श्रीविहल पदरज प्रताप बल निर्भर फिरत सदा 'गोविंद' ॥३॥

१) राग : श्री
 श्रीभागवत गूढार्थप्रकाशन परायण कों, महिमा में जाने तैं मेरौं मन अटवयो ।
 जबलौ श्रीवल्लभ की महिमा में जानी नहीं, तौ लौं हू याचत ठौर ठौर भटवयो ॥१॥
 वर्षणी की संगति तैं मेरौ मन भ्रष्ट भयो, कछु विवेक समझे बिनु रह्यो बीच लटवयो ।
 श्रीवल्लभ संगति तैं मेरे हदै उपज्यो ज्ञान, साधुसंग कीनों में और सबै पटवयो ॥२॥
 अब जिय मों जानत हौ आयुष तौ वृथा जात, काम क्रोध लोभ मोह मत्सर तैं सटवयो ।
 सबहु कछु चेत मूढ सुभग सुरति हदै धरि, और सब परिहरौ तुम 'गोविंद' जन संग गटवयो ॥३॥

२) राग : आसावरी
 साकार ब्रह्मवादैंक स्थापक प्रगट भये ।
 सुनि स्त्रवननि निज दैवी सृष्टि सबके दुख दूर गये ॥१॥
 हरिवदनानल प्रगटे बिन जगत सब जात बहययो ।
 सुर नर मुनि स्त्रुति सास्त्र पुराननि हारद न लहयो ॥२॥
 कलि में करुना अरि कृष्णपदसेवा सिखये ।
 जन 'गोविंद' सोइ बडभागी जिनि यह तिति निभये ॥३॥

३) राग : रामश्री
 करहु वेदपारग सुखद वरनसेवा ।
 आनि आलाप तजि वहिनपदकमल-भजि श्रीवल्लभ सकल देवाधिदेवा ॥१॥
 कलिकल्मषापहं सकलदुःखदारणं भवसिधुतारणं परमममलं ।
 साधन सब तजौ निसिदिन वल्लभ भजौ अति सुखद सुवहिनपदयुगलकमलं ॥२॥
 परमसुखदायिनी भवितरनपायिनी देत हैं हरि वदनवहिनदाता ।
 श्रीवल्लभवर बिना तीनहु लोक में 'गोविंद' नहि सुने और कोउ भयत्राता ॥३॥

४) राग : टोडी
 मायावादनिराकर्ता प्रकटे श्रीवल्लभद्विजराज ।
 श्रीहरि प्रगट किए मुख मूरति पुष्टि प्रगटबे काज ॥१॥
 महिमा स्त्रवन सुनत कुमुदिनी से फूले भवतसमाज ।
 अब उद्धार विषयिनी चित्र गई सबनि की भाज ॥२॥
 जयजयकार भयो त्रिभुवन में रहे भुवन सब गाज ।
 सुमिरत तैं आनंद होत है 'गोविंद' जन सिरताज ॥३॥

५) राग : टोडी
 सर्ववादिनिरासकृत् कौ को जन पावत पार ।
 स्त्रुति स्मृति सास्त्र पुरान अगोचर पुरुषोत्तम निरधार ॥१॥
 धरनीतल में प्रकट भए बिनु बसुधा बूडत भार ।
 प्राकृतरूप असुर मोहन कों अप्राकृत प्राण अधार ॥२॥
 बिनु साधन उद्भरत निजजन कों प्रगट कृष्ण अवतार ।
 जो सर्वसु श्रीव्रजजन कों दे सो 'गोविंद' कौ रखवार ॥३॥

६) राग : टोडी
 भवितमार्गाब्जमार्तण्ड अर्वाणि उदय जानि जिय दैवीजन कमल फूले ।
 श्रीवल्लभ प्राकृत रूप देखि आसुर सृष्टि मोहित अति विदुषवृंद भूले ॥१॥
 स्त्रुतिपथ भयो प्रकास मायावाद तिमिर गयो सुभग मूरति निरखि उपज्यो आनंद ।
 मन वच क्रम करि कहत 'गोविंद' जप किए सहजसौं पेहै सुखद आनंद ॥२॥
 कलिकलुषहरन हरि आपु अपनो वदनवहिन हवै निज दास दरस दीन्हों ।
 द्विजवर अवतार धरि प्रेम सौं भवित करि सिखाए निज दास सब गुनप्रबीनों ॥३॥

(१३) राग : टोडी

स्त्रीशूद्राद्युद्धतिक्षम कौ जस व्यापि रह्यो त्रिलोक मांहि ।
बिन साधन व्रजपति कौ सौपत श्रीवल्लभवर दृढ करि गहि बांहि ॥१॥
उर आनंद न समात पुष्टिजन करत अहर्निश वही गुनगान ।
पटतर तनक न पावत कोऊ सुर नर जन करत बखान ॥२॥
भूत भविष्य स्त्रवन नहि सुनियत करि करुना अब दरस दिखायो ।
यह निधि साधन तें नहि पैयत श्रीविह्वल पद रज 'गोविंद' ॥३॥

(१४) राग : आसावरी

अंगीकृत्यैव गोपीश वल्लभकृत मानव नाम ।
करि करुना कलिकाल में निजजन के पूरे काम ॥१॥
अवनितल में आनंद भयो घर घर आठौ जाम ।
सुभग मूरत श्रीवल्लभ है देखे नखसिख अभिराम ॥२॥
अब चिंता सब मिट गई प्रगट भयो सुख कौ धाम ।
फूल्यो 'फिरत 'गोविंद' सदा पायो निजपद गोकुल गाम ॥३॥

(१५) राग : सारंग

अंगीकृतौ समर्पादो पुरुषोत्तम प्रगट भए स्त्रवन सुनत निजजन उपज्यो आनंद ।
करि करुना हरिवदनानल श्रीवल्लभदास दियो बिछुर्यो मन वच क्रम करि प्रगट गोकुलचंद ॥१॥
नखसिख सब अति अनुपम प्रगट भए धर्मयूप रूप वसुधा पान करत सबै विदुष वृंद ।
सुर नर मुनि करि समाधि एकचित्त हवै ध्यान धरत पावत नहि पार कछु मायावादिमत्तगयंद ॥२॥
देखियत प्राकृत रूप निश्चय है अप्राकृत मानुषाकृति देखि परे फंद ।
पुष्टिसृष्टि उद्भवन कौ द्विजवर अवतार धर्यो मायामत खंडन कौ प्रगट 'गोविंद' ॥३॥

(१६) राग : देवगंधार

अबके महाकारुणिक कहियत तजि निजधाम अवनितल प्रगट भए
सबके मनभाए ॥१॥

अपनी प्रतिज्ञा सत्य करि तुम निजजन नेह निबाहे ।
सब परिकर लै सरन भयो सो तब पद सरोज रज पाए ॥२॥
जिन नहि जाने श्रीहरि मुख मूरति तिन वृथा जनम गंवाए ।
सर्वसु श्रीवल्लभ निजजन कौ सो 'गोविंद' जन जस गाए ॥३॥

(१७) राग : रामश्री

विभु' तुम अबके मोहि उद्धारौ ।
अतिहि समर्थ स्त्रवन सुनियत है श्रीवल्लभ नाम तिहारौ ॥१॥
उधरे अधम अनेक साधन बिनु अपने जिय विचारौ ।
कोटिक जनम कौ मंहा अपराधी मेरे अवगुन सबै बिसारौ ॥२॥
निःसाधन हौं रंक जानि जिय दुस्तर भवसागर तारौ ।
विनति सुनहु रंक 'गोविंद' कौ अपनी प्रतिज्ञा पारौ ॥३॥

(१८) राग : नट

अदेयदानदक्ष स्त्रवन सुनि हौं सरन आयो ।
सिव विरंचि सुर नर मुनि कोउ पार न पायौ ॥१॥
है अप्राकृत रूप अपुनौ प्राकृत रूप दिखायो ।
दैवी जीव बिना असुर सबकौ मोह उपजायो ॥२॥
तिहारी महिमा स्त्रवन भयी मेरो मन भायो ।
श्रीवल्लभ पदरज धन 'गोविंद' प्रेम सहित गुन गायो ॥३॥

(१९) राग : विश्वास

महोदारचरित्रवान् की पदरज हौं पाऊं ।
असदालाप असत् संगति औ र सबै बिसराऊं ॥१॥
सूभग मूरति श्रीवल्लभ बिन कहूं नहिं सीस नवाऊं ।
हरिसेवा हरिकथा छांडिके अनत कहूं नहिं जाऊं ॥२॥
निसिदिन गुनगान करौं नैननि हदै सिराऊं ।
'गोविंद' जन इतनौ चाहत तिहारौ दास कहाऊं ॥३॥

(२०) राग : सारंग

प्राक्तानुकृतिब्याज मोहितासुरमानुष प्रभु सुर नर मुनि ध्यान धरत पार कछु न पावै ।
दिवि भुवि पाताल में कोउ पटतर नहीं है अप्राकृत रूप दिखायो आसुर मोह उपजावै ॥१॥
कोटि जनम भटकि भटकि अब मन में हार मानि साधन करि वृथा क्योंहि जनम सब गमाव ।
और सब उपाधि छांडि असत्संग कौं निवारि संसय सब मन कौ काढ्यो अपने जिय आवै ॥२॥
वचनामृत स्त्रवन सुनौं हरिसेवा हित सौं करौं दुस्तर भवसिंधु तरौं वल्लभ उर लावै ।
कहत 'गोविंद' कलिजुग में और कछु उपाय नाहीं मन वचन क्रम करि निसिदिन श्रीवल्लभ
गुन गावै ॥३॥

(२१) राग : भैरव

वैश्वानर नाम सुनत असुर जीव जरि मरें ।
मायावादि मत गयंद सुनत उपज्यो त्रास, अति उजास देखि अवकास आइ सबै पांयनि परें ॥१॥
जो अपने जिय जानि सरनागत होइ रहैं, बिन साधन करुना करि कलिजुग में उद्धरें ।
मन वचन क्रम करिकें कहत अन्य उपाय सबै तजौ, 'गोविंद' प्रभुचरण भजौ सो भवसागर तरै ॥२॥

(२२) राग : गोडी

वल्लभाख्य वल्लभ मोकों अति ।
रसना रटन करौ हौ रैनिदिन लगन लागि रहै सुनहुं प्रानपति ॥१॥
तिहारै दरस बिन दुख पावत हौं करहु कृपा रंक पर द्विजपति ।
महालक्ष्मीपति सुनहु विनती सदा रहौं ऐसी मेरी मति ॥२॥
दुर्लभांधि सदा सबहु सुनहु सुबोधिनी वचनामृत नित ।
औ र सबे तजि सरन भयौ हो तुम बिन 'गोविंद' की न औ र गति ॥३॥

(२३) राग : देवगंधार

सद्रूप श्रीवल्लभ नाम तिहारौ ।
करि करुना करुनानिधान प्रभु अपनी प्रतीज्ञा आपु प्रतिपारौ ॥१॥
तिहारे चरनकमल आश्रय बिन भय उपजत हैं भारौ ।
सेवा कथा मोहि लागत विष सम सब संसारौ ॥२॥
चित में चितन करत अहर्निसि कटत कोटि जंजारौ ।
श्रीवल्लभ वल्लभ करि 'गोविंद' कन वचन क्रम निरधारौ ॥३॥

(२४) राग : ईमन

हितकृत्सतां विनती सुनहु हमारी ।
कालब्याल की सत्वर गति देखि भय उपजत है भारी ॥१॥
बिन साधन उद्धरे अनेक जन मनु वचन क्रम निरधारी ।
तजि निज धाम अवनितल प्रगटे अपनी प्रतिज्ञा पारी ॥२॥
तिहारौ नाम उच्चार किये तैं कटत कोटि जंजारी ।
'गोविंद' जन मांगत हैं अंधिजर नहिं चाहत संसारी ॥३॥

(२५) राग : भैरव

जनशिक्षाकृते कृष्णभक्तिकृत् गुन गाइये ।
साधन तै अति दुर्लभ सो सहज में पाइये ॥१॥

या समान औ र कछु अबलौ हम सुन्यो नाहि श्रीवल्लभ बिना कोउ अभय दान दीनों ।
तातै सब साधन तजि सरनागत होइ रह्यो हरिवदनानल श्रीवल्लभ सबै गुन प्रबीनों ॥२॥
रासरसिक लीलामृत उदधि निसिवासर रहि प्रिय श्रीवल्लभवर रहत है रस भीनों ।
कहत 'गोविंद' और सब साधन तजि चरन भज्यो सो तौ सज्जन जाने एही लूटि लीनों ॥३॥

(२६) राग : विभास

निखिलेष्टद नामहि सुनत सुख उपजत मन सुभग मूरति निरखि मेरे नैन सिराऊं ।
श्रीवल्लभ महा उदार सरनागत रक्षपाल महिमा अपार जानि सदा सीस नाऊं ॥१॥
दुर्लभ दरस दियो मोहि विनती कहा करौ तोहि परौ रहौ तिहारी पौरि निसिदिन गुन गाऊं ।
और सबै छांडि देहु सर्व जिय जानि मेरे जिय में लाऊं ॥२॥

तिहारे गुन सुनौ सुनाऊं असत् संग विरमाऊं असदालाप अन्याश्रय और सबै बिसराऊं ।
तिहारी बात सबै सुहात और विष सी लागत औ र कहा कहूं बेर बेर लजाऊं ॥३॥
रंक दीन जानिकै प्रभु कलिजुग में कृपा कीनि अब इतनों चाहत 'गोविंद' तिहारौ दास कहाऊं ।
तीन भुवन में तुम समान दूजौ कोउ आवत नाहीं निजजन हित जानि देहु चरनरेनु पाऊं ॥४॥

(२७) राग : विभास

सर्वलक्षणसम्पन्न सुमिरे तैं परम सुख होत ।
बिन साधन किए उद्धारत हैं फुल एकोत्तर गीत ॥१॥
ऐसी निधि बहुर्यो नहि पावत श्रीवल्लभ चरन सरोज ।
सिव विरंचि सचीपति सुर नर मुनि हारे करि करि खोज ॥२॥
दैवीजनहित कारण प्रगटे द्विजवर अवतार ।
कहत 'गोविंद' श्रीवल्लभ सुमिरे बिन होते नाहि निस्तार ॥३॥

(२८) राग : भैरव

श्रीकृष्णज्ञानद सो मेरे मन भाए ।
करि करुना कलिजुग में निज धाम तजि कृपानिधि दैवीजन उद्धारन को अवनीतल आए ॥१॥
अन्य भजन असदालाप असत्संग असमर्पित काम क्रोध लोभ मोह मत्सर मिताए ।
अपने जीव जानि दया करि सरनागतवत्सल स्वसिद्धांत वचनामृत सुबोधिनी सुनाए ॥२॥
निज स्वरूप गुप्त रूप जानत है कोऊ नहि करुना करि श्रीवल्लभ आप सब बताए ।
श्रीविह्वलवर सरोज रज धन 'गोविंद' पै अद्भुत आति महिमा सुजस सब गवाए ॥३॥

(२९) राग : विभास

गुरु तौ श्रीवल्लभ महाराज ।
और गुरु कहावै मिथ्या करिवेमुख करन के काज ॥१॥
चौदह विद्या निधि श्रीवल्लभ विदुष वृंद सिरताज ।
मारग पुष्टि कियो प्रगट भूतल रह्यो भुवन सब गाज ॥२॥
श्रीवल्लभ भानु दरस तैं कमल से फूले भवत समाज ।
आसा परिपूरन भयो 'गोविंद' गए सकल दुख भाज ॥३॥

(३०) राग : गौ डी

स्वानंदतुंदिल निजजन स्वानंद देत ।
बिन साधन कलिकाल घोर में निज सुत गृहिणी समेत ॥१॥
व्रजपति वहिन आनंदमय आदि दुर्गम संकेत ।
मायावाद निवारि अवनीतल बांधि भवित दृढ श्रेत ॥२॥
मानुष देह धारि यह समुझे बिन जीवत जैसे प्रेत ।
श्रीविह्वलपदरज 'गोविंद' जन निरखि बलैयां लेत ॥३॥

(३१) राग : विहाग

सेवक सुखदायी पदमदलायतविलोचन ।
निजजन उद्धरण हेत अवनीतल दरस दियो श्रीभावगत करि प्रकाश संतन दुःखमोचन ॥१॥
मायावाद तिमिर टारि पुष्टिभवित कियो प्रचार हरिसेवा दई दिखाइ अभयदान दीनों ।
दिवि भुवि पाताल में कोउ सुर नर मुनि श्रीवल्लभ पटतर कोउ पावत नाहि बडौ साखौ कीनों ॥२॥
देस काल द्रव्य कर्ता-कर्म मंत्र नष्ट भए तातैं कछु होत नाहीं कृष्णाश्रय कीजै ।
श्रीविह्वल पदरज 'गोविंद' जन एहि कहत मन वचन क्रम करिकै सदा वचनामृत पीजै ॥३॥

(३२) राग : आसावरी

कृपादृग्दृष्टिसंहृष्ट दासदासी प्रिय सुनौ बात ।
तिहारे दरस के कारण मै तजे नात अरु तात ॥१॥
और न कछु सुहात है मोहे अष्टप्रहर निसि प्रात ।
ये ही ध्यान हिरदै धरौ मोपै रहयो नाहिन जात ॥२॥
रंक मोहि जिय जानिकै प्रभु देहु दरस कौ दान ।
कीजै 'गोविंद' कौ कृपा करि करै तिहारे गुनगान ॥३॥

(३३) राग : रामश्री

पति तौ तुम ही हो महाराज ।
लोकवेद मरजाद तजी हम श्रीमुख दरसन काज ॥१॥
तीन भुवन में तिहारी पटतर पावत नाहिन कोई ।
तिहारी कृपाकटाक्ष वृष्टि तैं सो व्रजपति प्रिय डोई ॥२॥
गोद पसारि करत हौं विनती अबके मोहि उद्धारौ ।
एक बेरि करिकै कहौ 'गोविंद' रंक हमारौ ॥३॥

(३४) राग : नटनारायण

रोषदृक्पातसंप्लुष्ट भवताद्विट मेरे मन बसौ ।
काम तज्यौ क्रोध तज्यौ लोभ तज्यौ मोह तज्यौ मत्सर तजि सरन आयो अब इत उत माते राखौ ॥१॥
हौं सब साधन हीन तुम सब कलाप्रवीन रंक जानि मोहे कछु कृपा कीजै ।
कलिजुग में सुनियत है षट्साधन नष्ट भए तातैं कछु होत नाहीं अभयदान दीजै ॥२॥
तुम तौ हो महा उदार सरनागत रक्षपाल राखौ करुणाकर कलिजुग में बडौ साखौ कीनों
निसिवासर सज्जन संग करि समाज सुजस सुगान करत 'गोविंद' प्रभु जन मन रहत है राखौ ॥३॥

(३५) राग : मलार

हौं कैसें हारे भवतसेवित पद पाऊ ।
सर्वस्व लैहौं करिकै तिहारे सरन हौं जाऊ ॥१॥
और उपाय कछु सूझत नाहिन कहा दिन वृथा गवाऊं ।
सेवा करौ सुनौ कथा तिहारी सब प्रपंत बिसराऊं ॥२॥
काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर ताके दिन नाहि जाऊं ।
चित में चिंतन करौ हौं तुम्हारौ तिहारे ही गुन गाऊं ॥३॥
कालब्याल तैं डर उपजत भारी निर्भय पद उर लाऊं ।
करत 'गोविंद' कर जोरि विनती तव प्रसाद ही पाऊं ॥४॥

(३६) राग : सारंग

सुखसेव्य स्तवन उपज्यो मन आनंद ।
प्रगट भयौ धर्मरूप नखशिख आनंद रूप अर्चने भूप सरन भए निरखि श्रीमुखवंद ॥१॥
द्विजराज उदय भयौ मायामत तिमिर भयौ चहुँदोश उद्गमन से तपारि रहे विदुषवृत्त ।
पानि उदर आनन पद आनंदमय सकल अंग निरखत सब दैवीजन फूले मुखारविंद ॥२॥
मंद अति मंदभाग्य अति उपदेव दोख कीति मैं कल्पायुष जीत सब उपजे मातेमद ।
करुणा करि बिनु साधन उद्धरण कौ अपने जिय जानि श्रीवल्लभ प्रगटे 'गोविंद' ॥३॥

(39) राग : बसंत

दुसराध्य स्त्रवन नाम सुनिकै असुरन उपज्यो त्रास ।
सूर श्रीवल्लभ प्रगटके कीनों मायावाद विनास ॥१॥
श्रीवल्लभ भानु उदयो अवनितल स्त्रुतिपथ भयो प्रकास ।
बिन साधन अनेक उद्गारे दैवीजन पूरी आस ॥२॥
जयजयकार भयो भूतल में जस प्रसर्यौ आकास ।
श्रीविह्वल पदरज जन प्रमुदित गुन गावत 'गोविंददास' ॥३॥

(39) राग : बसंत

दुर्लभांधिसरोरुह पदयुग लालच लागि रही ।
उर अंतर की विरह वेदना जात न काहु कही ॥१॥
प्रीति की रीति अनित्य जानत जे तिनसों न जात कही ।
खानपान सुख बिसरि गयो विरहानल देह दही ॥२॥
अति दुर्लभ आयु की घटिका जात है सब बही ।
यह जिय जानि समर्प्यो सर्वसु तब 'गोविंद' निबही ॥३॥

(39) राग : भैरव

उग्रप्रताप अवनितल प्रगट भए स्त्रवननि सुनि दैवीजन घर घर सब करत हैं बधाई ।
हरिवदनानल श्रीवल्लभ करुणा करि कलिजुग में द्विजवपु धरि बहुर्यो दर्ई दिखाई ॥१॥
अगनित महिमा कहाँलौ एक रसना करौ बखान बडभागी दैवी सृष्टि रंक महानिधि पाई ।
चौसठ कला प्रवीन विद्यानिधि वल्लभवर प्राकृत वपु देखि मोहे कछुक पार न पाई ॥२॥
अबलौ ऐसौ स्वरूप देख्यो नहीं स्त्रवन सुन्यो निजजन उद्गरन यहबानिक बनि आई ।
कहत 'गोविंद' सुमिरौ सदा निसिबासर आठौ जाम आदर सौ जीव हों गुन गाई ॥३॥

(40) राग : जैतश्री

वाक्सीधुपूरिताशेषसेवक बिनती सुनौ ।
कोटि जनम के मेरे अवगुन कछु मति गिनौ ॥१॥
तुमसे महा उदार न कोउ आगे देखे न पाछे सुने अब यह विधि बनी सबै दैवीजन काज ।
करि करुणा सब परिकर सहित प्रगटे भूतल में सुर नर मुनि देखि कहत जय जय महाराज ॥२॥
उग्र प्रताप देखि कहत बहुर्यो प्रगट गोकुलेस वपु धरिकैं कौनौ कलिजुग में साखौ ।
कहत 'गोविंद' सब समर्पि श्रीवल्लभ के सरन जाऊं सुनियत है बिन साधन पुरत मन इच्छा अभिलाखौ ॥३॥

(41) राग : विश्वास

श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षम श्रीवल्लभ के नाम पै कोटी नाम वारू ।
और उपाय सबै तजौ श्रीवल्लभ पदकमल भजौ सुभग मूर्ति मम हृदय में आनि निमिष न बिसारू ॥१॥
जागत, सोबत रेनदिन रसना तै छांडू नाहि लगन लागि रही मन वच क्रम निरधारौ ।
पुनि प्रकटे श्रीवल्लभाधीश वदनवहिन आनंदमय श्रीवल्लभ दिनमनि कियो जगत उजारौ ॥२॥
मायावाद तिमिर गयो स्त्रुतिपथ प्रगट भयो मायावादी मत्त गयंद कौ उपज्यौ सिंध भारौ ।
कहत 'गोविंद' अन्य सबै उपाय उपाधि जानि तज्यौ हानि होत जातै कह्यौ सुनौ हमारौ ॥३॥

(42) राग : जैतश्री

तत्सारभूतरासस्त्रीभावपूरितविग्रह प्रभु रास रसिक लीलामृत रहत सदा श्रीनौ ।
निज प्रमेयबल करिकैं विन साधन कलिजुग में उद्गरे अनेक जीव भूमि सों जस लीनौ ॥१॥
मारग पुष्टि स्त्रुति स्मृति पुरान सास्त्र अति अगोवर मायावाद खंडन करि सो तौ प्रगट कीनौ ।
हरि सेवा विधि विवेक करुणाकर दैवी जीवन कौ सिखाइ विबुध जनन में बडौ साखौ कीनौ ॥२॥
श्रीवल्लभ स्वरूप महिमा कोऊ जानत नही सदानंद वदनवहिन सब कला प्रवीनौ ।
आनंदनिधि अगनित जस लीलामृत सागर में निसिबासर क्रीडत तहा 'गोविंद' जन श्रीनौ ॥३॥

(४३) राग : जैतश्री

सांनिध्यमात्रदत्त श्रीकृष्ण प्रेम सो स्वरूप श्रीवल्लभ कहाये ।
नखसिख सुन्दर देखि चकित भए लोक ही सब छांडि दै रहत है सिर नाये ॥१॥
जोग जग्य तीरथ व्रत दान इनि समान आवत नहीं इनि जानि जिय सबतै विरमाये ।
कहत 'गोविंद' सबै तजौ श्रीवल्लभ चरन भजौ सुर नर मुनि ध्यान धरत कछु पार नाये ॥२॥
भ्रमत भए कोटि जनम फल पायौ नाहीं न कछु यह बातन कैसे लोग महापद पाये ।
सत्संगति करौ मित्र प्रभु प्रसन्नता निमित्त दैवीजन सरन भए सो सबै फल पाये ॥३॥

(४४) राग : धन्याश्री

विमुक्तद निर्भयपद सुखदाई ।
जो पदरज दुर्लभ सुर नर मुनि सो सुलभ करि पाई ॥१॥
साधन तै पैयत नहि कबहुँ मन वचन निर्धार ।
बिन श्रीवल्लभपद नौका वयो पावै भवसागर पार ॥२॥
नामोच्चारणमात्र तै निश्चय कटत कोटि जंजार ।
श्रीविह्वल पदरज 'गोविंद' कौ श्रीवल्लभ प्रान आधार ॥३॥

(४५) राग : पूरवी

रासलीलैकतात्पर्य हारद है अति दुर्लभ ।
अतिक्रम जनम करम प्रवीन तातै होत नहीं बिना कृपा श्रीवल्लभ ॥१॥
यद्यपि रूप गुन सील सुधरता इनि बातनि सौं जनम सिराइये ।
समुझि विवेक सबै सर्वस तै सरन भए सब पाइये ॥२॥
यह सुख अति दुर्लभ सुर नर मुनि सब पविहारे ।
'गोविंद' सो सुख लूटि लियौ मन वचन क्रम निरधारे ॥३॥

(४६) राग : भैरव

कृपयैतकत्थाप्रद प्रभु बडी कृपा तुम कीनी ।
सन्मनुष्याकृति द्विजवर वपु धरि अधि धरनीतल दैवीजन उद्भवन कों हरिसेवा दीनी ॥१॥
विद्या तप ज्ञान हीन सब साधन रहित दीन अपने जिय जानिकै करुना करि दरस दीजै ।
तुम हौ सब कलाप्रवीन महोदार चरित्रवान अदेय दानदक्ष सो तौ नाम सत्य कीजै ॥२॥
और कछु करि सकत नाहीं विनती सुनौ श्रीवल्लभ तव पदरज अति दुर्लभ सो प्रसाद पाऊं ।
रंग 'गोविंददास' तिहारौ निर्भय निःसंक टहैकै तिहारै गुन गाऊं ॥३॥

(४७) राग : विहाग

विरहानुभवैकार्थसर्वत्यागोपदेशक प्रभु ।
तिहारै चरनरज पावत स्त्रवन सुनि तिहारै सरन आयो मोहि राखि लेहु विभु ॥१॥
तुम तो मारग पुष्टि प्रगट कियौ भुवि भवित प्रचार कायन कीनों है कृपा करे ।
ब्रह्मसम्बन्ध करवाय कीने दोष पंच परिहार सदानंद सेवा के निमित्त सत्य नाम कीनों श्रीहारे ॥२॥
यह सत्य ध्यान धरौ और संग परिहरौ संसारसागर तरौ तिहारै गुन गाऊ ।
अवगुन सबै बिसारौ अबकै मोहि उद्धारौ जन 'गोविंद' कहत निर्भय तब वद पाऊं ॥३॥

(४८) राग : वसंत

भवत्याचारोपदेष्टा चरननि में मन लागि रहयो ।
कहा करौ कित जाऊं कृपानिधि जात न मोपै कहयो ॥१॥
आधी निमिष कल्प सम वीतत बिरहानल देह दहयो ।
तिहारै दरस बिना मोपै नाहिंन जात रहयो ॥२॥
तिहारै जन संगति कीने बिनु में कछु नाहीं लहयो ।
बांह गहे बिनु भवसागर में 'गोविंद' जात बहयो ॥३॥

(४९) राग : वसंत

कर्ममार्गप्रवर्तक सुनिकै मो मन भयौ आनंद ।
चलहु वेगि देखनकों जैसे श्रीवल्लभ मुखचंच ॥१॥

जग्यपुरुष पुरुषोत्तम प्रगटे सुनि मोहे जनवृंद ।
कोटि काम वारौ यह छबि पर श्रीवल्लभ आनंदकंद ॥२॥

सिव विरंचि सुर नर मुनि निसदिन गावत गीत सुछंद ।
जीव उद्धारन प्रगटे पूरन परमानंद ॥३॥

(५०) राग : विहाग

यागादौ भवितमार्गेकसाधनत्वोपदेशक प्रभु ।

तिहारी कृपा बिन मर्यादा पुष्टि कौ भेद न जानत कोउ विनती सुनौ हो प्रभु ॥१॥

प्रतारक सास्त्र स्त्रवन सुनि श्रष्ट भयौ लहत न स्मृति पथ भय उपजत भारौ ।

तुम बिन दैवीजन कौ त्रिलोक में ढूढ़ देख्यो नाहिंन रखवारौ ॥२॥

धर्म अर्थ काम मोक्ष सबहि तुमहि हौ तिहारे चरन बिन कछु हम न जान्यो ।

कहत 'गोविंद' जन मन वचन कर्म करि हरिवदनानल श्रीवल्लभ मन मान्यो ॥३॥

(५१) राग : रामकली

पूर्णानंद यथारथ नाम ।

आनंद पूरन किए निज जन सब श्रीवल्लभ रूप पर अभिराम ॥१॥

मनसेच्छित फल देत कृपानिधि ऐहिक आमुष्मिक सब काम ।

जो बडभागी सोई समुझे यह छाडत नाहीं आठौ जाम ॥२॥

जाके हिये लभन लागी गहे श्रीवल्लभ सुख कौ धाम ।

'गोविंद' सदा विमल जस गावत डोलत फिरत श्रीगोकुलधाम ॥३॥

(५२) राग : धन्याश्री

पूरनकाम श्रीवल्लभ नाम ।

नखसिख सुंदर सुभग मूरति कों निरखहु आठौ जाम ॥१॥

सुर नर मुनिजन दिवि भुवि पाताल में न आवै कोउ समान ।

दैवी सृष्टि उद्धारन प्रगटे निर्भय दीने दान ॥२॥

बिनु साधन उद्धरे अनेक जन श्रीवल्लभ महा उदार ।

द्विजवर व्है प्रगटे 'गोविंद' प्रभु निज जन प्राण अधार ॥३॥

(५३) राग : धन्याश्री

कृपा करि वाक्ति रूप न धरेते ।

इहि कलिकाल धोर में कैसे निज जन निस्तरते ॥१॥

वहिनवदन प्रगटे बिनु सब कोऊ धर्मराज बस परते ।

अति आवत सहित भवसागर तें कहौ कैसे उतरते ॥२॥

कोटि काम लावन्य श्रीमुखछबि बिन देखे सब मरते ।

अष्टमहासिद्धि सो सब पाये जो 'गोविंद' प्रभु वरते ॥३॥

(५४) राग : बिलावल

बिबुधेश्वर की बात अटपटी ।

जौ लौ स्त्रवन परी नहिं मेरे तौलौ नाहीं होत चटपटी ॥१॥

भोग सिंगार रीति सेवा की मन वचन क्रम सर्व लटपटी ।

यह विवेक बूझत नहिं कोऊ करत हैं सब अपनी जु अरफटी ॥२॥

करिकै सिखवत है सबै निज दासन कों ज्यों समुझे सब वेगि झटपटी ।

श्रीविह्वल पदरज 'गोविंद' को असुरनि सौं नित होत खटपटी ॥३॥

(५५) राग : भैरव

कृष्णनामसहस्रस्य ववता गुन गाइये ।
बिनु साधन कलिजुग में अष्टमहासिद्धि पाइये ॥१॥
अन्य ध्यान सब छाडि श्रीवल्लभ उर लाइये ।
हरिवदनानल सु महिमा काहू सों न जनाइये ॥२॥
सुभग मूरति पदसरोज सों लगन लगाइये ।
कहत 'गोविंद' कर जोरि विनती इनहि सुनाइये ॥३॥

(५६) राग : कल्याण

भवतपरायण भूतल प्रगटे ।
निज जन के कलिकाल घोर में बिनु साधन अब महा अघ कटे ॥१॥
यह छबि अबहि बनि आई भरि भरि नैनन निरखौ ।
सुभग मूरति कौ रूपसुधामृत पान करौ हृदय में रखौ ॥२॥
सुजस सुनों नाम कीर्तन कौ सुमरहु आठौ जाम ।
'गोविंद' श्रीवल्लभ पर लै वारौ कोटिक काम ॥३॥

(५७) राग : केदारी

भवत्याचारोपदेशार्थनानावाक्यनिरूपक वचनमृत स्त्रवन सुनत मृत जियाए निजजन ।
आंधिसरोरुह हृदय धरौ और सब परिहरौ चित विनतन करौ सुजस सुनों स्त्रवन ॥१॥
जैसी तुम कृपा करी वैसी कोउ करै नांही, बिन साधन कलि में उद्गारे अधमन ।
सुभग मूरति बिन और न सुहात कछु प्रेम उदाधि मध्य मगन भयो मन ॥२॥
मनुष्य देह पाइकै श्रीवल्लभ के शरण बिना कोटिक साधन कीने वृथा होत आयुषधन ।
दैवीजन जीवन श्रीवल्लभपदरजधन श्रीविहल करुणा तैं राखहु 'गोविंद' पन ॥३॥

(५८) राग : मामेरी

स्वार्थोज्झिताखिलप्राणाप्रेय तुम करि कृष्ण सेवाफल दीनों ।
साधन तैं सुपने जाने सो सब निज प्रमेयबल कीनों ॥१॥
यह विधि अबहि बनी आई सो सब दैवी सृष्टि मनभाई ।
सेवा करिकै आप सिखाइ जो निगम पुरान में कहू न बताई ॥२॥
शिव सनकादि सुरेश चतुरानन करि समाधि कछु न पाये ।
सो श्रीविहल करुणा तैं 'गोविंद' आनंद मगन हवै सदा गुन गाए ॥३॥

(५९) राग : गौड़ी

हे तादृशवेष्टित हौ जन तिहारौ ।
साधन हीन बह हीन जानि जिय भय उपजत है भारौ ॥१॥
तप स्वाध्याय वैराग्य जोग ज्ञान बल भवित रहैत पर नैक निहारौ ।
तजि निज जन धाम अवनीतल प्रगटे अपनी प्रतिज्ञा आप प्रतिपारौ ॥२॥
ऐसी कबहु भई सुनियत नाहै बिन साधन सब जगत उद्गारौ ।
यह सुनि सरन तिहारे आयो रंक 'गोविंद' कों कहौ हमारौ ॥३॥

(६०) राग : मलार

स्वदासार्थकृताशेषसाधन तुम पर सर्वस लै वारि डारौ ।
तीन लोक में तिहारी बात कौ मरम की जानत मन वचन कम निधारौ ॥१॥
तिहारी चरनरज है अति पावन परसत तन कौ कटत अध भारौ ।
मंदमति मंदभाग्य कोटे उपद्रव कलि में साधन घट नष्ट भए पावत नाहै भव पारौ ॥२॥
जिन महिमामृत पान कियो सब साधन तजि सरनागत व्हैं तिनको पलकनिमन झारौ ।
'गोविंद' प्रभु नव धन वरषा करि अंतर ताप मिटाइ अपनी प्रतिज्ञा पारौ ॥३॥

(६१) राग : गौडी

सर्वशक्तिधृक् श्रीवल्लभ गति परत न जानी ।

श्रुति स्मृति सास्त्र पुराण में अति गोप्य कोउ जानत नहीं श्रीहरि स्वास्य प्रगट करि कलि में बखानी ॥१॥

आसुर जीव प्रतारन को कीनो मायावाद मारग भूतनाथ द्वारा तामें मोहे अजानी ।

जौ लौ उदयो वल्लभ भानु तौलौ भूतल तिमिर बाढौ अब उजास श्रुति प्रकास किए कृतारथ प्रानी ॥२॥

मायावाद मत गयंद वल्लभ सिंह प्रगट सुनिके उपज्यौ त्रास भयौ उपहास भागे आते अभिमानी ।

श्रीविहल प्रतापबल तै गुन गावत 'गोविंद' जन पुष्टि प्रभु की गति सबहिं मन मानी ॥३॥

(६२) राग : ईमन

भुवि भवितप्रचारैककृते स्वान्वयकृत् ।

दैवीजन उद्धरण को द्विजवर वपु धृत ॥१॥

ब्रह्मसंबंध कराइ कीनों पंचदोष निवर्तन ।

स्वसिद्धांत सुनाइ के कीनों पुष्टिभवित प्रवर्तन ॥२॥

कलि में बहु कृतारथ कीने दीनी हरिसेवा ।

'गोविंद' प्रभु श्रीवल्लभ सब देवन को देवा ॥३॥

(६३) राग : कल्याण

दैवी जीवन कौ श्रीवल्लभ बिन और न कोउ पिता ।

तीनि लोक में सुर नर मुनि जन नहिं पावत समता ॥१॥

पुष्टिसृष्टि उद्धरण को कल्पतरु प्रसरी प्रेमलता ।

यह विवेक समुझे बिनु मन की मिटत नहीं भ्रमता ॥२॥

सिव विरंचि सचीपति मन लाजत देखि सबै प्रभुता ।

कहत 'गोविंद' श्रीवल्लभ वद बिन कहूं न निर्भयता ॥३॥

(६४) राग : विशास

स्ववंशे स्थापिताशेषमाहात्म्य करिकै जु प्रभु वसुधातल सुख दै पुष्टिमारग प्रगट कीनो ।

द्विजवर अवतार धर्यौ बिनु साधन जगत उद्धर्यौ हरिसेवा करि सिखाइ अभयदान दीनो ॥१॥

रासरसिक मूरति श्रीव्रजपति की लीला सुजस निसिवासर ध्यान धरत रहत हृदय भीनो ।

चौ दह विद्या निधान द्वाविंशत् लक्षत जूत षट्गुन सहित वतुः षष्टि कला प्रवीनो ॥२॥

और ध्यान सबै छांडि सरन भयो मन वचन क्रम करि अपनौ करि लै ताको मन मिट्यो अभिमानी ।

श्रीविहल पदरजधन सर्वस है 'गोविंद' को वल्लभवर ते सब लगत जगत दीनो ॥३॥

(६५) राग : भैरव

श्रीस्मयापह की चरनरेनु पलकानि करि झारौ ।

मनभाविनी सुभग मूरति नैनति ते निहारौ ॥१॥

आनंदमय अनलवदन हृदयसरोज लाऊं ।

असदालाप असत्संग और सबै बिसराऊं ॥२॥

तिहारे चरनकमल छांडि और कहूं न जाऊं ।

कहत 'गोविंद' तिहारौ सुजस जनम गाऊं ॥३॥

(६६) राग : ईमन

पतिव्रतापति तुम हो ।

हौं पतिव्रता दासी तिहारी तुम पतिव्रत निबहौ ॥१॥

स्वंग मृत्यु पाताल के तुम पति मति कोऊ और कहौ ।

श्रीवल्लभ तुम हो जु जगतपति सदा मम हिरदै रहौ ॥२॥

परम महानिधि पाए पुष्टिजन मति कोऊ आनि लहौ ।

भवसागर बूडत अपनौ करि 'गोविंद' बांह गहौ ॥३॥

(६७) राग : नट

पारलौ किंकैहिकदानकृत् वित धरौ ।

अन्य आलाप सब वृथा जिय जानिके सुभग मूरति सुजस गुन गान करौ ॥१॥

सुखद सेवा करौ औ र सब परिहरौ स्त्रवन कीर्तन करौ आठौ जाम ।

वित वितन करौ होत है परम सुख सुनत हैं श्रीवल्लभ पूरनकाम ॥२॥

नाम महिमा नहीं प्रकट भूलोक में स्मृति स्मृति सास्त्र पुरान गूढ ।

कहत 'गोविंद' जन सृष्टि दैवी बिना और जानत नहीं असुर मूढ ॥३॥

(६८) राग : रामश्री

निगूढ हृदय श्रीवल्लभ व्रजेश ।

सुजस स्त्रवन सुनत होत आनंद अति जनम कोटि कौ हरत वलेश ॥१॥

चरनरज धरत सिर कोटि तैतीस सुर पार पावत न ब्रह्मा महेश ।

अन्य अवतार में मुख्य अवतार यह श्रीहरि विशेष ॥२॥

अन्य आलाप तजि ध्यान हिरदै धरौ प्रगट श्रीवल्लभ अवनितल परेश ।

कहत 'गोविंद' जन बहु दरसन दियौ धोषपति विदित द्विजराज वेश ॥३॥

(६९) राग : सारंग

अनन्यभक्तेषु ज्ञापिताशय ।

स्मृतिहारद कौ श्रीवल्लभ बिनु समुझत नहीं सुरशाय ॥१॥

पतिव्रता अपने पति के आगे स्वहारद सब विनती करै ।

सौ पति श्रीहरिवदनाल बिनु भवसागर कौ परिहरै ॥२॥

सो वडभागी भरतखंड प्रगटे बिन साधन भवसागर तरै ।

यह वितेक समुझ्यो जन 'गोविंद' श्रीवल्लभ हिरदे घरै ॥३॥

(७०) राग : सारंग

उपासनादिमार्गतिमुग्धमोहनिवारक प्रभु प्रगट होइ कीने है निगम पथ प्रकास ।

सिव विरंचि सचीपाते देव कोटि तैतीस भयौ आनंद सुरसुंदरी वांछे विमान छाये आकास ॥१॥

सुर नर मुनि प्रफुलित मन सुजस विमल करत गात मायावादी विदुषवृंद उपज्यौ मन नाराय ।

श्रीवल्लभ भानु दरस सब दैवीजन कमल फूले देखत अणूभाष्य ॥२॥

चौदह विद्या निधान षट्गुण प्रभु पूरनकाम चतुःषष्टि कला सहित स्व आरय ।

श्रीविह्वल पदरज धन 'गोविंद' को मन वत्त क्रम औ र कह्यु नाहीं श्रीवल्लभ पद उपास्य ॥३॥

(७१) राग : सामेरी

श्रीहरिस्वबदनाल श्रीवल्लभ कौ करि करुना प्रगट किये ।

द्विविध पुष्टिमरजादा भवित कौ भेद प्रगट करिये कौ आज्ञा किये ॥१॥

सो श्रीवल्लभ प्रभु आज्ञा तै भुवि सन्मनुष्याकृति द्विज वपु विभ्रत् ।

भवितमार्गे सर्वमार्गवैलक्षण्यानुभूतिकृत् ॥२॥

मरजादा में मंत्र करि हरि विभूति करिके भजौ ।

पुष्टि मे एक स्नेह कौ कहै 'गोविंद' वहिन बिन सब तजौ ॥३॥

(७२) राग : विभास

पृथक्शरणमार्गोपदेष्ट सुखद पदकमल अन्य आलाप तजि हिरदे राखौ ।

वित वितन करौ औ र सब परिहरौ सुजस स्त्रवन करौ वदन भाखौ ॥१॥

सकल साधन तजि श्रीवल्लभपद भजौ असत्संग छांडिकै गाते दाखौ ।

देव दुर्लभ दरस सौ सुलभ होत है जानी जिय पूरत हैं सबनिके मन अभिलाखौ ।

कहत 'गोविंद' जन तीनहि लोक में तुम बिनाह मोहि नहीं और पाखौ ॥३॥

(७३) राग : भैरव

दिवि भुवि पाताल में कोऊ नाहीं श्रीकृष्णहार्दवित् ।
पुष्टिसृष्टि उद्भवन कौ करुना करि कलिजुग में श्रीहरि निज वदन वहिन प्रगटे हैं निज जन हित ॥१॥
सो स्वरूप श्रीवल्लभ श्रीभागवत गूढार्थ करि प्रकास सदानन्द सेवाविधि सब सिखवत ।
तीरथ ब्रत धर्म कर्म दान देहदमन सबै छांडि भजौ श्रीवल्लभ जिनि भूतल द्विजदेह विभक्त ॥२॥
ब्रह्म साकार स्थापन करि दैवीजन किये कृतार्थ स्त्रुति विरोध टारि सबै बहिन मायावाद भित् ।
ब्रजपति मुनि दरस भयो भूतल आनंद भयो कुंज निकुंज डोलत है व्रजप्रिय 'गोविंद' सहित ॥३॥

(७४) राग : भैरव

प्रतिक्षणनिकुंजलीलास्थलरससुपूरित कौ स्वरूप हृदय में धारे ।
तिनके भाग्य कहां लौ बरनौ लीलारस अगाध सागर श्रीवल्लभ हृदय तैं न टारै ॥१॥
छिन छिन प्रति रोम रोम लीलारस उच्छलत होत जो निसिदिन ऐसौ रूप वितारै ।
वृंदावन निकुंजलीला सहित व्रजपति तिनतैं कबहुं होत न न्यारै ॥२॥
तिनको पावन पदरज परस तैं दरसन मात्र तैं कटत है अथ भारे ।
कहत 'गोविंद' ऐसेन की संगति तिनको मिलै जायै श्रीविहल हौंहि कृपारे ॥३॥

(७५) राग : भैरव

तत्कथाक्षिपितचित्तस्य पदसरोझ पाऊं ।
आनि आलाप सब तजौ श्रीवल्लभशरण जाऊं ॥१॥
सेवा अरु कथा छांडि नहीं क्यहुं ललवाऊं ।
विमल सुजस छांडि कबहुं और न गाऊं ॥२॥
सुभग मूरति छांडि नहीं और रस लाऊं ।
'गोविंद' इतनौ मांगत तिहारौ दास कहाऊं ॥३॥

(७६) राग : ईमन कल्याण

विस्मृतान्यरस के वरनकमल तैं सब सुख पैयै ।
अन्य आलाप करौ जिन कोऊ अति सुखदायक श्रीवल्लभ कौ विमल सदा जस गैयै ॥१॥
अति दुर्लभ श्रीवल्लभ दरस कौ त्रिविध महादुःख सब तैं साह्ये ।
साधन कोटि करौ जिन कोऊ काया कौ वृथा भटाके दिन खोवत सरनागत रहै रह्यै ॥२॥
यह निधि एक उपाय तैं पैयत सर्वस लै समर्पन करै तुम श्रीवल्लभ धैर्य ।
सेवा कथा साधु संगति करि निसिदिन सुभग मूरति चित में धारिकैं 'गोविंद' नेह निबह्यै ॥३॥

(७७) राग : वसंत

ब्रजप्रिय प्रिय निजधाम बतायौ ।
वतुरानन अपने सुत भृगु कौ स्त्रुतिरुपा भाव जनायौ ॥१॥
सुर नर मुनि समाधि किये पै पार कहुं न पायौ ।
रस रसिक मूरति किशोराकृति गोधन के संग धायौ ॥२॥
वृज व्रजजन पति पदरज धन निगम निरुद्ध बतायौ ।
सौ सब सर्वस 'गोविंद' जन कौ सो अबहि भयौ मनभायौ ॥३॥

(७८) राग : ईमन कल्याण

तबलौ प्रिय व्रजस्थिति कौ हारद न कहुं लह्यौ ।
जौ लौ श्रीवदन वहिन श्रीवल्लभ आपुन नाहि कह्यौ ॥१॥
साधन करि पचहारि मूढमति कारन कहुं न भयौ ।
सर्वस कियो समर्पन प्रभुकौ तब यह निबह्यौ ॥२॥
श्रीवल्लभ पदरज महिमा बिजु जानै भवार्सिंधु में जात बह्यौ ।
श्रीविहल पदरज धन 'गोविंद' एहि उपाय कह्यौ ॥३॥

(७९) राग : गौ डी

पुष्टिलीलाकर्ता दुर्लभ दरस तिहारौ ।
साधन तै कछु होत नाहीं मन वचन क्रम तिहारौ ॥१॥
जे जन सर्वसु लै सरन भयौ पदनौ का दै भवसागर पार उतारौ ।
जो जन विमुख श्रीवल्लभचरणन तै सो तौ सर्वस हारौ ॥२॥
अब तो आई बनि जिय मेरे तुम बिन और न कोउ रखवारौ ।
सत्यप्रतिज्ञ चरनरज 'गोविंद' रंक जानिकै कहौ हमारौ ॥३॥

(८०) राग : बिलावल

रहःप्रिय सदा एकान्त ही भावै ।
लीला सदा द्विविध व्रजपति की अनुभव करत न और सुहावै ॥१॥
दैवीजन निजपद नौ का दै बिन साधन भवसागर तारौ ।
महा कलिकाल ब्याल दुःसह भय टारि अपनी प्रतिज्ञा पारौ ॥२॥
अब निर्भय सो भजि श्रीवल्लभ पदकमल सुपरिमल पीजै ।
कहत 'गोविंद' तजौ सब साधन अब मन वचन क्रम करि लूटि यह रस लीजै ॥३॥

(८१) राग : धनाश्री

भक्तेच्छापूरक दरसन दीजै ।
तुम तो महा उदार सुनियत है कृपा मोपै कीजै ॥१॥
तुम बिन और नाहीं कछु समुझौ मोहि अपनौ करि लीजै ।
निःसाधन रंक तिहारौ निज चरणाश्रय दीजै ॥२॥
तिहारै निज संग बिना मेरौ नहिं उस अंतर भीजै ।
कहत 'गोविंद' चरणामृत तजिकै कहा समर्पित जल पीजै ॥३॥

(८२) राग : देस

सर्वज्ञातलीला राँ पटतर कोऊ न आवै ।
तीन लोक में सुर नर मुनि कोऊ पार न पावै ॥१॥
अद्भुत सुजस विमल कौ सेस सहरत्र मुख गावै ।
तात मात भ्रात भागिनी ग्रहिनी न सुहावै ॥२॥
यह महिमा स्तवननि सुनि अब कछु और न भावै ।
सब साधन तजि 'गोविंद' निसिदिन श्रीवल्लभ उस लावै ॥३॥

(८३) राग : बिलावल

अतिमोहन की अटपटी रीति ।
तीनि भुवन में स्तवननि सुनियत देखत लगत सबै विपरीति ॥१॥
साधन किए होत नाहिंन कछु मितत नाहिं काल की नीति ।
श्रीवल्लभ करुणा कटाक्ष तै होत है सदानंद पद प्रीति ॥२॥
यह विवेक जाने बिन सब कोउ करत है क्रिया सबै जु अनीति ।
महिमा जिन जान्यो सो 'गोविंद' सो जन गयो सबनि को जीति ॥३॥

(८४) राग : सारंग

सर्वासवत सौं मन मान्यो ।
ऐसौ और नही भिभुवन में मन वचन क्रम करि जान्यो ॥१॥
अब कछु और सुहात नाहीं तज्यौ खान अरु पानी ।
मन अटक्यो फेर्यो न फिरत है सुदृढ प्रेम सौं सानी ॥२॥
यह महिमा जाने बिन भूतल बडी होत है हानी ।
श्रीवल्लभ करुणा तै 'गोविंद' जन सरबस करि ठानी ॥३॥

(८५) राग : गौड़ी

भजो भवतमात्रासवत सुखद चरण।

कलिमलनिवारण भवसिधुतरण निजजनउद्धरण अशरणशरण ॥१॥

कोटिकन्दपं लावण्य व्रजपतिवदन निरखि निजजन हृदय फूले ।

अतुल महिमा स्त्रवन सुनत थकित भए सुर नर मुनि सिव समाधि भूले ॥२॥

पृथक् करि पुष्टिपथ प्रगट भूतल कियो बिना साधन सिंगरौ जगत उदारौ ।

कहत 'गोविंद' जन अन्य आश्रय तजौ सुनियत श्रीवल्लभ उद्धर्यो जगत सारौ ॥३॥

(८६) राग : रामश्री

तिहारौ पतितपावन नाम।

व्रजपति सुनहु मेरी विनती हौं सब पतितानि कौ धाम ॥१॥

सत्यप्रतिज्ञ स्त्रवन सुनत हौं बसत गोकुल गाम ।

बिना साधन जगत उद्धर्यो पूरे जन मन के काम ॥२॥

अद्भूत तिहारी महिमा सुनिहौं सुमिरौं आतौं जाम ।

ब्रह्मवाद 'गोविंद' स्थापना कियो खंडन कियो मत बाम ॥३॥

(८७) राग : विभास

स्वयशोगानसंहृष्टदयाभोजविष्टर पदकमल सुगल परिमल कौ मोहि मसुकर कीजै

धर्मरहित कर्मरहित विद्या अरु ज्ञान हीन रंक दीन जानि जिस निज पदाश्रय कीजै ॥१॥

अबलौ जनम कोटि भटके भटके हार मानि समुझ्यौ नाई कहूँ वितेक अखाई महिमा जगल

श्रीहरिवदनाल श्रीवल्लभ आनंदमय अवनिमल प्रगट भए सुनि सुभग मूरति सो मन मान्य ॥२॥

तिहारी कृपा कटाक्ष तैं अति दुर्लभ सो पावत फल सदानंद सेवा सौं प्रेम सो निबद्ध

कहत 'गोविंद' सब तजौ श्रीवल्लभवरुण भजौ महिमा अति गूढ है सो कलि में को उद्धर ॥३॥

(८८) राग : आसावरी

यशःपीयूषलहरीप्लावितान्तरास।

तुम समान त्रिभुवन में नाहीं और सब नीरस तुम पर सर्वस तैं वारौ ॥१॥

जो उपाय कहे जु कृपा करि निजजन उद्धरण हेतु ।

निगम विरोध निवारन कौ प्रभु बांधी भावेत दृढ सेतु ॥२॥

वह प्रताप स्त्रवन सुनिकै असुरनि उपज्यो पास ।

श्रीवल्लभ कौ विमल जस निसिदेन गावत 'गोविंददास' ॥३॥

(८९) राग : धनाश्री

परात्पर मम वल्लभ सद्गुण।

करि करुना कलिजुग में पगटे निगम कल्पतरु रूप ॥१॥

नखसिंख सुंदर आनंदमय तपु द्वादस अंग अनूप ।

सुभग मूरति कौ नैननि निरखत कोहत अवनी रूप ॥२॥

यह स्वरूप महिमा बिनु जाने जगत पर्यो भवकूप ।

'गोविंद' चिता मिटी सबै जब निरख्यो सुखद स्वरूप ॥३॥

(९०) राग : भैरव

लीलामृतरसाद्राद्रीकृताखिलशरीरभूत तिहारै दरस बिनु कैसे करि जाय

औगुन सबै बिसारि कृपादृष्टि सौं निहारि अपनी प्रतिज्ञा पारि दरस मोहि दीज्यो ॥१॥

धर्मकर्म हीन आचारक्रेया सब भ्रष्ट ज्ञानभ्रष्ट जीव सबै विन साधन उद्धरे ।

यह प्रताप स्त्रवन सुनिकै सुन नर मुनि थकित भए अपने जिस जानिकै पास आए सबाह पाइन परे ॥२॥

असुरन कौ उपज्यो त्रास निजजन मन भयो हुलास बाल विरध नरनारी सबाने क मर भाए ।

श्रीविठ्ठलपद परागधन सर्वस 'गोविंद' जन और सबै छांडि श्रीवल्लभ गुन गाए ॥३॥